तशते पुरखूँ में नज़र जब शाह का सर

तशते पुरखूँ में नज़र जब शाह का सर आ गया
सब पुकारे लो शफ़क़ में माहे अनवर आ गया

शिमर से पानी तलब करते ही करते वक़्ते अस्र
बढ़के प्यासे के गले तक आबे ख़न्ज़र आ गया

बहरे खूँ में ग़र्क होकर हाय आशूरे के दिन
तशना कामों का सफ़ीना निज़दे कौसर आ गया

ले चले सर नंगे जब एहले हरम को अशक़िया
बनके चादर खु़द ग़ुबारे दशत सर पर आ गया

ज़ोफ बोला आबिदे बीमार खोलो ग़श से आँख
बेड़ियाँ लेकर करीं जिस दम सितमगर आ गया

शह ने देखा यास की नजरों से सूए आसमाँ
हल्क़ के नज़दीक जब क़ातिल का खन्ज़र आ गया

देखने वाले यह समझे है शफ़क़ में आफताब
ख़ूने फ़रके शाह जब चेहरे पर बहकर आ गया

दर्द लैला के कलेजे में उठा एक दफ़ातन
जब कभी लब पर किसी के नामे अकबर आ गया

ज़िन्दगी जो 'फिक्र' की शौक़े ज़ियारत में कटी
जा कनीं के वक़्त खुद मौलाए क़मबर आ गया